भारत में दबाव समूह, Pressure Group

आमंड ने हित समूहों को राजनीतिक व्यवस्था का अनिवार्य अंग माना है इनके हित स्पष्टीकरण करने वाली इकाई माना है। साधारण शब्दों में हित समूह लोगों का वह संगठन है जो किसी निश्चित उद्देश्य से प्रेरित होता है और राजनीतिक व्यवस्था में अपने उद्देश्य की प्राप्ति से जुड़ा होता है। दबाव समूह राजनीतिक दलों से भिन्न होते हैं।

राजनीतिक दल सत्ता में भाग लेने के उद्देश्य होते हैं दबाव समूह सत्ता से बाहर रहकर ही अपने उद्देश्य प्राप्त करना चाहता है राजनीतिक दल की तुलना में दबाव समूह का आकार संकुचित होता है उनके उद्देश्य अधिक स्पष्ट होते हैं।

यद्यपि दबाव समूह सर्वाधिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में पाये जाते हैं लोकतन्त्र में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण है ~~भारत~~ दबाव समूह राजनीतिक आधुनिकीकरण की ओर इंगित होते हैं क्योंकि ये कार्य विशेषीकरण के आधार पर स्थापित किया जाता है। राजनीतिक प्रक्रिया में यह भीड़भाड़ी को व्यक्त करते हैं। दबाव समूहों का उद्भव U.S.A से हुआ है।

मननीय राजनीतिक व्यवस्था दबाव समूहों के कार्य को स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है भारत के संदर्भ में दबाव समूहों की भूमिका

को भिन्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है।
आमंड के अनुसार चार प्रकार के दबाव समूह होते हैं। ① संस्थानात्मक ② ~~समुदायिकात्मक~~ असंस्थानात्मक
③ संघात्मक ~~और समुदायिकात्मक~~ ④ ~~प्रतिनिधित्व~~ प्रदर्शनात्मक

जीन ब्लांडेल के अनुसार दबाव समूह दो भाग
① समुदायिक दबाव समूह ② संघात्मक
→ रूढ़िवादी — या पृथक भाव
↳ संरक्षणात्मक
↳ उत्थानात्मक

भारत में उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर विभिन्न प्रकार के दबाव समूहों को निम्न रूप में व्यक्त किया जा सकता ① संस्थानात्मक जो शासन से जुड़े होते हैं। जैसे, नौकरशाहों का दबाव समूह कांग्रेस Working Committee भारत में संस्थानात्मक समूह काफी प्रभाव शाली हैं।
① बहुत लम्बे समय तक कांग्रेस वर्किंग कमेटी के निर्णय ने भारतीय राजनीति को प्रभावित किया।
नौकरशाहों का दबाव समूह अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है नेहरू के शासन काल में नेहरू के शासन काल में दबाव समूह प्रभावकारी नहीं था शास्त्री के युग में इनका प्रभाव बढ़ा। लाल बहादुर शास्त्री ने प्रधान मंत्री सचिवालय की स्थापना किया इसने प्रभाव बढ़ा दिया। प्रधान मंत्री का सचिव एल.के. झा

को प्रभावित करने की महत्वपूर्ण क्षमता रखता शासन के
जैसे L.K. Jha इंडिया सोसाइटी के समय पी०एम०
केसर वाजपेयी - ब्रजेश मिश्रा ने सरकारी
नीतियों को बहुत अधिक प्रभावित किया है इन
का कारण सरकारी कार्यों की विशेषज्ञता अनुभव
प्रशासन ऊंची तक व्यक्तिगत संपर्क महत्वपूर्ण है।

सहचारात्मक, समुदायात्मक :- इस प्रकार के समूहों
के रूप में हैं यूनियन कृषक यूनियन भारत में
महेन्द्र सिंह टिकैत का भारतीय किसान यूनियन
शरद जोशी का शेतकारी संगठन महत्वपूर्ण कृषक
संगठन सभी राजनीतिक दलों का अपना-2 है यूनियन

गैर ~~समुदायात्मक~~ : संघात्मक इनकी संख्या सबसे अधिक
है, सर्व जातीय, भाषा के रूप में भारतीय समाज बंटा
हुआ है इस तरीके दबाव समूह काफी संख्या
में है, सक्रिय सभा, कायस्थ सभा, इस प्रकार के
समूहों में R.S.S. काफी सक्रिय रहा है।

प्रतिमानी :- दबाव समूह वह है जो आन्दोलन के रूप
में उभरते हैं पहली भारतीय राजनीति में उभरते
रहते हैं इसका सबसे बढ़िया उदाहरण है
1905 के विरोध में उभरा छात्र आंदोलन इनका

Scanned with CamScanner

समय सीमित होता है या वो समाप्त हो जाते है यह संक्रमणात्मक रूप लेते है। भारत में 'ट्रेड यूनियन' का आरम्भ एक 'आन्दोलन' की रूप में हुआ था। बाद में राजनीतिक दल बन गये।

निष्कर्ष = भारत में दबाव समूह विशेष प्रभावकारी नहीं रहे हैं। दबाव समूहों का धीरे-2 विकास हो रहा है। भारत में इतने शक्तिशाली नहीं हैं जितने की U.S.A में। भारत में दबाव समूह राजनीतिक दलों के मत बटोरने का कार्य किया है। भारत में दबाव समूह चुनावों के समय सक्रिय हो जाते। 1990ई के उदारीकरण की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप आर्थिक दबाव समूह का महत्व बढ़ा है।

A.